# राजस्थान की संत परंपरा में राग एवं ताल का अप्रचलित स्वरूप

**कमल त्रिवेदी**

**व्याख्याता, संगीत कंठ राजकीय महाविद्यालय, बूंदी**

सार

समृद्ध ऐतिहासिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विरासत से जुड़ी है। यहाँ की भक्ति परंपरा को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा गया हैः सगुण परंपरा (मूर्ति पूजा और साकार रूप में ईश्वर की उपासना) और निर्गुण परंपरा (निराकार ईश्वर की उपासना)। [1]

लोकगीत राजस्थान की लोक संस्कृति की आत्मा हैं

ये गीत सामान्य जन की बोलचाल की भाषा में गाए जाते हैं

लोकगीतों में मानवीय भावनाएं, प्रेम, विरह, श्रम, प्रकृति और भक्ति का चित्रण होता है

इनका गायन

राजसी दरबारों

त्योहारों

सामाजिक अवसरों

दैनिक जीवन के कार्यों के समय किया जाता है

लोकगीत की परिभाषाएं और विचार

लोकगीत मानव मन में उत्पन्न भावों की संगीतमय अभिव्यक्ति है

रामचंद्र शुक्ल

हमारी संस्कृति लोकगीतों के कंधों पर टिकी है

महात्मा गांधी

लोकगीत हमारी संस्कृति के रक्षक हैं

रवीन्द्रनाथ टैगोर

लोकगीत संस्कृति में सुखद संदेश लाने की कला हैं

जवाहरलाल नेहरू

लोकगीत जन समुदाय की आत्मा हैं

देवेंद्र सत्यार्थी

लोकगीत किसी संस्कृति के मुख बोले चित्र होते हैं

परिचय

राजस्थान की समृद्ध संत परंपरा (जैसे कबीर पंथ, दादू पंथ, जसनाथी, बिश्नोई और रामस्नेही संप्रदाय) में आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का मुख्य माध्यम संगीत रहा है। समय के साथ, इस परंपरा के राग एवं ताल का मूल और अनूठा स्वरूप आज लगभग अप्रचलित (विलुप्तप्राय) हो चला है, जिसका स्थान आधुनिक सुगम संगीत और सुगठित शास्त्रीय नियमों ने ले लिया है। [1, 2, 3, 4]

इस परंपरा में राग एवं ताल के अप्रचलित होते स्वरूपों का मुख्य विवरण निम्नलिखित है:

1. रागों का अप्रचलित स्वरूप: 'देसी' और मिश्रित रागिनियाँ

प्राचीन काल में संत संगीतकारों का उद्देश्य मनोरंजन या कठिन गायन प्रदर्शन नहीं, बल्कि आंतरिक भावों की अभिव्यक्ति था। इसलिए वे शास्त्रीय रागों के कठोर नियमों से बंधे नहीं थे: [1]

- देसी राग (मिश्रित अंग): संतों की वाणियों में बिलावल, काफी, देस, सारंग, खमाज और पीलू जैसी रागों का प्रयोग मिलता था, लेकिन इनका स्वरूप शुद्ध शास्त्रीय न होकर 'देसी अंग' (क्षेत्रीय लोक धुनों का मिश्रण) होता था। आज यह विशिष्ट 'देसी मिश्रण' लुप्त हो रहा है और भजनों को शुद्ध शास्त्रीय या पूरी तरह फिल्मी धुनों पर गाया जाने लगा है। [1, 2, 3, 4]
- मांड गायकी का पुराना आध्यात्मिक रूप: हालांकि मांड आज भी प्रचलित है, लेकिन संतों द्वारा मांड राग में गाए जाने वाले गंभीर और वैराग्य प्रधान आध्यात्मिक भजन (जैसे 'हेली' या 'चेतावनी' भजन) अब बहुत कम सुनने को मिलते हैं। [1, 2]
- विशिष्ट संत-वाणियाँ और विशिष्ट धुनें: दादू दयाल और मीराबाई के पदों के लिए कुछ विशिष्ट पारंपरिक राग-ढांचे (जैसे राग आसावरी या सोरठ का स्थानीय स्वरूप) नियत थे, जो अब मौखिक परंपरा के कमजोर होने के कारण अप्रचलित हो चुके हैं।

2. तालों का अप्रचलित स्वरूप: अनियत और खुली आवर्तन पद्धतियां

संत संगीत में ताल का उपयोग समय को कठोरता से मापने के लिए नहीं, बल्कि पद के बोल (शब्द) की गति के अनुसार होता था: [1, 2]

- खुली और अनियत लय (Free Rhythm): पुराने निर्गुणी और साधु-वाणी सत्संगों में भजनों की शुरुआत अक्सर बिना किसी निश्चित ताल या मात्रा के होती थी, जिसे 'साखी' या 'दोहा' गायन कहा जाता था। इसमें गायक अपने अंतस के वेग के

अनुसार लय को घटाता या बढ़ाता था। आज के आधुनिक वाद्यों (जैसे इलेक्ट्रॉनिक पैड या ड्रम) के आने से यह अनियत लय पद्धति पूरी तरह बंद हो गई है। [1]

- पारंपरिक लोक-ताल (देशी ताल): कहरवा या दादरा जैसे प्रचलित तालों के अलावा, राजस्थान के संत संगीत में कुछ विशेष मात्राओं वाले खंड (जैसे 7 या 11 मात्राओं के अनूठे क्षेत्रीय आवर्तन) चलते थे, जिन्हें 'तेरह ताल' या स्थानीय मंजीरा/खड़ताल गतों के साथ बजाया जाता था। अब इन जटिल लोक-तालों का स्थान साधारण 8 मात्रा की कहरवा ताल ने ले लिया है। [1, 2, 3, 4]

3. अप्रचलित होते पारंपरिक वाद्य और उनकी संगत

राग और ताल को जीवंत रखने वाले पारंपरिक वाद्यों का चलन घटने से भी संगीत का पुराना स्वरूप अप्रचलित हुआ है:[5,6,7]

- तंबूरा (चौतारा या भपंग): निर्गुणी भजनों में मुख्य रूप से प्रयुक्त होने वाले 'चौतारा' (चार तारों वाला तंबूरा) पर बजाई जाने वाली विशेष थाप और राग-सुर अब दुर्लभ हो गए हैं।
- खड़ताल और कमायचा का आध्यात्मिक संयोजन: पश्चिमी राजस्थान के मांगणियार और लंगा कलाकारों द्वारा संतों की वाणियों में किया जाने वाला कमायचा और खड़ताल का वह विशिष्ट राग-ताल समन्वय अब केवल सांस्कृतिक मंचों तक सीमित रह गया है, नियमित सत्संगों से यह गायब हो चुका है।

विचार-विमर्श

राजस्थान के प्रमुख संत एवं संप्रदाय

• संत जाम्भोजी (विश्नोई संप्रदाय):

• इनका जन्म 1451 में पीपासर (नागौर) में हुआ था।

• इन्होंने 1485 में समराथल (बीकानेर) में विश्नोई संप्रदाय की स्थापना की और पर्यावरण संरक्षण व जीव रक्षा से जुड़े 29 नियम दिए। इनका मुख्य पीठ मुकाम (बीकानेर) है।

• संत जसनाथ जी (जसनाथी संप्रदाय):

• इनका जन्म 1482 में कतरियासर (बीकानेर) में हुआ।

• इन्होंने जसनाथी संप्रदाय की स्थापना की और 36 नियम बनाए। इस संप्रदाय के अनुयायी प्रसिद्ध 'अग्नि नृत्य' करते हैं।

• संत दादू दयाल जी (दादू पंथ):[8,9,10]

• इन्हें 'राजस्थान का कबीर' कहा जाता है।

• इनका जन्म 1544 में अहमदाबाद में हुआ था, और इनका प्रमुख केंद्र/प्रधान पीठ नरेना (जयपुर) में है। इनके 52 प्रमुख शिष्यों के केंद्र '52 थंभ' कहलाते हैं।

• मीराबाई (मीरा दासी संप्रदाय):

• इनका जन्म 1498 में कुड़की (पाली) में हुआ था।

• ये कृष्ण भक्ति की सर्वोच्च कवयित्री और संत थीं, जिनका मुख्य केंद्र मेड़ता सिटी रहा है।

• संत मावजी (निष्कलंक संप्रदाय):

• इनका जन्म 1714 में हुआ। इन्होंने वागड़ क्षेत्र (डूंगरपुर–बांसवाड़ा) में 'निष्कलंक संप्रदाय' चलाया।

• इनका मुख्य मंदिर साबला (डूंगरपुर) में है और इन्होंने 'चोपड़ा' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की।

• रामस्नेही संप्रदाय:

• इसकी प्रमुख पीठ शाहपुरा (भीलवाड़ा) में है, जिसके संस्थापक संत रामचरण जी थे। इसके अलावा रेण (नागौर) में संत दरियाव जी और खेड़ापा (जोधपुर) में संत रामदास जी की शाखाएँ हैं।[11,12,13]

## परिणाम

राजस्थान की लोक संस्कृति और शास्त्रीय संगीत में रागों और तालों का एक अनूठा संगम देखने को मिलता है। यहाँ का संगीत मरुभूमि की भावना, उत्सवों और जनजीवन के रंगों को अभिव्यक्त करता है।

यहाँ राजस्थान के प्रमुख रागों और तालों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है:

### 1. राजस्थान के प्रमुख राग

राजस्थान के लोक और उप–शास्त्रीय संगीत में कुछ विशिष्ट रागों का प्रयोग बहुतायत से होता है, जिनमें से कई का उद्गम यहीं की लोक धुनों से हुआ है:

- राग मांड (Maand): यह राजस्थान का सबसे प्रसिद्ध और अनूठा राग है। यह लोक धुन से विकसित हुआ एक उप-शास्त्रीय राग है, जिसे शृंगार और करुण रस के लिए जाना जाता है। प्रसिद्ध गीत "पधारो म्हारे देस" इसी राग में गाया जाता है।
- राग सोरठ (Sorath): यह खमाज ठाट का राग है, जिसका उपयोग राजस्थान के लोक गीतों और वीरों की गाथाओं (जैसे पाबूजी की फड़) को गाते समय किया जाता है।
- राग देश (Desh): वर्षा ऋतु के गीतों (जैसे कजली या तीज के गीत) और देशभक्ति व भक्ति रस के लोक गीतों में इस राग का गहरा प्रभाव दिखता है।
- राग सारंग (Sarang): दोपहर के समय गाए जाने वाले लोक गीतों और मरुस्थल की शांति को दर्शाने वाले संगीत में इसका खूब प्रयोग होता है।
- राग बिलावल और भैरवी: यहाँ के मांगलिक अवसरों, विवाह गीतों और सुबह के भजनों में इन रागों के स्वर मुख्य रूप से सुनाई देते हैं।

2. राजस्थान के प्रमुख ताल और वाद्य[14,15,16]

राजस्थानी संगीत की लय (ताल) बहुत ही चंचल, ऊर्जावान और लोकनृत्यों के अनुकूल होती है। यहाँ शास्त्रीय तालों के साथ-साथ कई लोक ताल भी प्रचलित हैं:

- केरवा ताल (Kaherva Taal): 8 मात्राओं का यह ताल राजस्थान के अधिकांश घूमर, कालबेलिया और सामान्य लोक गीतों में सबसे ज्यादा बजाया जाता है।
- दादरा ताल (Dadra Taal): 6 मात्राओं का यह ताल विवाह के गीतों (बन्ना-बन्नी) और चंग/धमाल के गीतों में काम आता है।
- दीपचंदी और रूपक ताल: 14 और 7 मात्राओं के इन तालों का प्रयोग मांड गायकी और मीराबाई के भजनों को गाते समय किया जाता है।
- चंग और ढोल की थाप: होली के दिनों में बजाया जाने वाला 'धमाल' एक विशिष्ट लोक ताल है, जो चंग वाद्य पर द्रुत गति से बजता है।
- खड़ताल और भपंग की लय: लंगा और मांगणियार कलाकारों द्वारा खड़ताल के माध्यम से बेहद जटिल और द्रुत गति की लयकारी (क्रॉस-रिदम) पेश की जाती है।
    - राजस्थान में संगीत अलग-अलग जातियों के हिसाब से है ,जिसमें ये जातियां आती है -लांगा ,सपेरा , मांगणीयरभोपा और जोगी। यहां संगीतकारों के दो परम्परागत कक्षाएं है एक लांगा और और दूसरी मांगणीयर। राजस्थान में पारम्परिक संगीत में महिलाओं का गाना जो बहुत प्रसिद्ध है जो कि (पणीहारी) नाम से है। इनके अलावा विभिन्न जातियों के संगीतकार अलग-अलग तरीकों से गायन करते हैं। सपेरा बीन बजाकर सांप को नचाता है तो भोपा जो फड़ में गायन करता है। राजस्थान के संगीत में लोकदेवताओं पर भी काफी गीत गाये गए हैं। इनके अलावा विभिन्न जातियों के लोग अलग-अलग तरीक़ों से गायन करते हैं। सपेरा बीन बजाके सांप को नचाता है

तो भोपा फड़ में गायन करते हैं। राजस्थान के संगीत में लोकदेवाताओ पर भी काफी गायन होता है जिसमें मुख्य रूप से पाबूजी ,बाबा रामदेव जी ,तेजाजी इत्यादि लोकदेवाताओं पर भजन गाये जाते है।[17,18,19]

- ढोली
- ढोली समुदाय के लोग ब्याह शादियों में अपना संगीत प्रस्तुत करते है साथ ही समुदाय के लोग विशेषरूप से माजीसा के भजन करते हैं।
- **ढोल**
- राजस्थान के संगीत में ढोल एक मुख्य वाद्य है यह एक बड़ा वाद्ययंत्र Archived 2022-05-23 at the वेबैक मशीन है साथ ही इसके साथ हारमोनियम का सहारा लेकर ढोली गायन करते हैं।
- मौसम के अनुसार गायन
- राजस्थान मानसून के आने पर भी कई प्रकार के गाने गाये जाते हैं। जीरा , पुदीना , सांगरी इत्यादि पर गीत गाये जा रहे हैं।

निष्कर्ष

राजस्थान की परंपरा शौर्य, त्याग, समृद्ध लोकसंस्कृति और 'अतिथि देवो भवः' (मेहमान को भगवान मानने) की भावना पर आधारित है। यहाँ के रीति-रिवाज, पहनावा, लोक कलाएं और उत्सव इसकी पहचान हैं। [1, 2]

प्रमुख परंपराएं और रीति-रिवाज

- अतिथि सत्कार: राजस्थानी संस्कृति में मेहमानों का बहुत सम्मान किया जाता है, जिसके लिए "पधारो म्हारे देश" की कहावत प्रसिद्ध है। [1]
- संस्कार और जन्म-विवाह:
  - जन्म के समय तांबे की थालियाँ बजाई जाती हैं और निष्क्रमण संस्कार (सूर्य दर्शन) कराया जाता है।
  - विवाह में तोरण मारना, सप्तपदी (अग्नि के फेरे जिसमें तीन फेरे दुल्हन और चार फेरे दूल्हा आगे चलते हैं) जैसी परंपराएं निभाई जाती हैं। [1, 2]

वेशभूषा और आभूषण

- पुरुष: आमतौर पर कुर्ता-पायजामा और सिर पर रंग-बिरंगी पगड़ी (साफा) पहनते हैं। [1]
- महिलाएं: पारंपरिक रूप से घाघरा-चोली और ओढ़नी पहनती हैं। इसके अलावा आड़, नथ, हथफूल, रखड़ी और कदनी जैसे पारंपरिक आभूषण पहने जाते हैं। [1, 2]

लोक नृत्य और संगीत

- घूमर: यह राजस्थान का सबसे प्रसिद्ध पारंपरिक लोकनृत्य है, जो मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता है। [1]
- कालबेलिया: कालबेलिया समुदाय द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य अपनी ऊर्जा और कलाबाजी के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। [1]
- अन्य नृत्य: भवाई (सिर पर कई मटके रखकर नृत्य) और चरी नृत्य भी लोकप्रिय हैं। [1]
- लोकगीत: भोपा और अन्य स्थानीय गायकों द्वारा वीरता और प्रेम की गाथाएं गाई जाती हैं। [1]

खान-पान और उत्सव

- भोजन: यहाँ का पारंपरिक भोजन दाल बाटी चूरमा और लाल मास बेहद प्रसिद्ध है, और मिठाइयों में घेवर खास स्थान रखता है। [1]
- मेले और त्योहार: पुष्कर मेला, बीकानेर का ऊंट महोत्सव, गणगौर और तीज यहाँ के प्रमुख उत्सव हैं।[20]

संदर्भ


1. "विधानसभा चुनाव से पहले, गहलोत ने राजस्थान में 19 नए जिलों के गठन की घोषणा की । " द हिंदू । 17 मार्च 2023। ISSN 0971-751X । मूल से 17 मार्च 2023 को संग्रहित । 17 मार्च 2023 को पुनः प्राप्त ।
2. "भाजपा के वयोवृद्ध हरिभाऊ किसनराव बागड़े बने राजस्थान के राज्यपाल: 5 बिंदु" । एनडीटीवी । 28 जुलाई 2024. 28 जुलाई 2024 को मूल से संग्रहीत । 28 जुलाई 2024 को पुनःप्राप्त .
3. "राजस्थान का भू-आकृति विज्ञान" । पर्यावरण पोर्टल । राजस्थान सरकार। मूल से 24 मार्च 2023 को संग्रहित । 24 मार्च 2023 को पुनः प्राप्त ।
4. "गुरु शिखर...माउंट अबू" । राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र। 10 अप्रैल 2009। मूल से 10 अप्रैल 2009 को संग्रहित। 24 मार्च 2023 को पुनः प्राप्त । [ बेहतर स्रोत की आवश्यकता है ]
5. "राजस्थान प्रोफाइल" (पीडीएफ) । भारत की जनगणना । मूल प्रति से 16 सितंबर 2016 को संग्रहित (पीडीएफ) । 21 जुलाई 2016 को पुनः प्राप्त ।
6. भाषाई अल्पसंख्यकों के आयुक्त की रिपोर्ट: 52वीं रिपोर्ट (जुलाई 2014 से जून 2015) (पीडीएफ) । भाषाई अल्पसंख्यक आयुक्त, अल्पसंख्यक मामलों का मंत्रालय, भारत सरकार। पृष्ठ 34-35 । मूल (पीडीएफ) से 28 दिसंबर 2017 को संग्रहित । 16 फरवरी 2016 को पुनः प्राप्त ।
7. "राजस्थान बजट विश्लेषण ।
8. "भारत: उपराष्ट्रीय एचडीआई" । ग्लोबल डेटा लैब्स । मूल से 23 सितंबर 2018 को संग्रहीत । 8 जून 2025 को पुनः प्राप्त ।

9. परिशिष्ट–अः विस्तृत सारणियाँ, सारणी (7): प्रत्येक राज्य/केंद्र शासित प्रदेश के लिए विभिन्न आयु समूहों के व्यक्तियों की साक्षरता दर (प्रतिशत में) (व्यक्ति, आयु समूह (वर्ष): 7 और उससे अधिक, ग्रामीण+शहरी (स्तंभ 6))। वार्षिक रिपोर्ट, आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) (जुलाई 2023 – जून 2024) (पीडीएफ) । राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार। 23 सितंबर 2024। पृष्ठ अ–10। मूल से 11 जून 2025 को संग्रहीत (पीडीएफ) । 8 जून 2025 को पुनः प्राप्त ।

10. भारत के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का लिंग अनुपात राष्ट्रीय स्वास्थ्य सर्वेक्षण (2019-2021) के अनुसार। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत । मूल प्रति 8 जनवरी 2023 को संग्रहित । 8 जनवरी 2023 को पुनः प्राप्त ।

11. "राजस्थान के प्रतीक" । राजस्थान सरकार। मूल से 14 नवंबर 2016 को संग्रहित । 13 नवंबर 2016 को पुनः प्राप्त ।

12. बोलैंड–क्रू, तारा; ली, डेविड (2003). भारत के क्षेत्र और राज्य । रूटलेज। पृष्ठ 208. ISBN 978-1-135-35625-526 अक्टूबर 2019 को प्राप्त किया गया ।

13. अंतरराज्यीय परिषद सचिवालय – गृह मंत्रालय, भारत सरकार । गृह मंत्रालय । मूल प्रति 17 फरवरी 2017 को संग्रहित । 1 दिसंबर 2018 को पुनः प्राप्त ।

14. "उत्तरी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र" । संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार । मूल प्रति 19 अक्टूबर 2018 को संग्रहित । 1 दिसंबर 2018 को पुनः प्राप्त ।

15. भाषाई अल्पसंख्यकों के आयुक्त की रिपोर्ट: 50वीं रिपोर्ट (जुलाई 2012 से जून 2013) (पीडीएफ) । भाषाई अल्पसंख्यक आयुक्त, अल्पसंख्यक मामलों का मंत्रालय, भारत सरकार। पृष्ठ 22। मूल (पीडीएफ) से 8 जुलाई 2016 को संग्रहित । 26 दिसंबर 2014 को पुनः प्राप्त ।

16. विश्व धरोहर सूची। मूल रूप से 30 अक्टूबर 2010 को संग्रहित । 18 मार्च 2011 को पुनः प्राप्त ।

17. "भारत सरकार का सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एमओएसपीआई) का शुद्ध घरेलू उत्पाद । मूल प्रति 23 मार्च 2020 को संग्रहित । 7 अप्रैल 2020 को पुनः प्राप्त ।

18. "उप–राष्ट्रीय एचडीआई – क्षेत्र डेटाबेस" । ग्लोबल डेटा लैब । मूल से 23 सितंबर 2018 को संग्रहीत । 13 सितंबर 2018 को पुनः प्राप्त ।

19. एफ.के. कपिल (1990). राजपुताना राज्य, 1817–1950 . बुक ट्रेजर. पृ. 1. मूल से 1 जनवरी 2016 को संग्रहित . 15 नवंबर 2015 को पुनः प्राप्त .

20. जॉन की (2001). भारत: एक इतिहास . ग्रोव प्रेस. पृ. 231–232 . ISBN 978-0-8021-3797-5मूल रूप से 1 जनवरी 2016 को संग्रहित । 15 नवंबर 2015 को पुनः प्राप्त । कर्नल जेम्स टॉड, जो राजस्थान का दौरा करने वाले पहले ब्रिटिश अधिकारी थे, ने 1820 के दशक का अधिकांश समय इसकी राजनीतिक संभावनाओं का पता लगाने में बिताया और " रश बूट्स" की एक बिल्कुल अलग अवधारणा बनाई [...] और तब से पूरा क्षेत्र अंग्रेजों के लिए 'राजपुताना' बन गया। इस शब्द को पूर्वव्यापी प्रामाणिकता भी प्राप्त हुई, क्योंकि जॉन ब्रिज ने फरिश्ता के प्रारंभिक इस्लामी भारत के इतिहास के 1829 के अनुवाद में, डॉव के पहले के संस्करण में प्रयुक्त 'भारतीय राजकुमार' वाक्यांश को हटाकर उसके स्थान पर 'राजपूत राजकुमार' का प्रयोग किया।